INDIAN SCHOOL AL WADI AL KABIR

Class: IX	Department: Hindi	Date of submission: NA
Question Bank	Topic: शुक्रतारे के समान	Note: Pl. file in portfolio

पाठ : शुक्रतारे के समान - लेखक : स्वामी आनंद

प्रश्न - {1} महादेव भाई अपना परिचय किस रूप में देते थे ?

उत्तर - मित्रों के बीच महादेव भाई स्वयं को गांधीजी का 'हम्माल' कहने और कभी-कभी 'पीर-बावर्ची-भिश्ती-खर' के रूप में अपना परिचय देने में गौरव का अनुभव करते थे ।

प्रश्न - {2} 'यंग इंडिया' साप्ताहिक में लेखों की कमी क्यों रहने लगी थी ?

उत्तर - 'यंग इंडिया साप्ताहिक' में लेखों की कमी इसलिए रहने लगी क्योंकि इसमें लिखने वाले प्रमुख लेखक हॉर्नीमैन को गांधीजी का अनुयायी होने के कारण देश निकले की सज़ा देकर इंग्लैंड वापस भेज दिया गया । अंग्रजों को एक अंग्रेज़ द्वारा गांधीजी की प्रशंसा बर्दाश्त नहीं हुई, जिसकी सज़ा हॉर्नीमैन को मिली ।

प्रश्न - {3} गांधीजी ने 'यंग इंडिया' प्रकाशित करने के विषय में क्या निश्चय किया ?

उत्तर - स्वतंत्रता आन्दोलन के दौरान गांधीजी की गतिविधियाँ अत्यधिक बढ़ गईं । इन गतिविधियों और अपने विचारों को लोगों तक पहुँचाने के लिए गांधीजी जी ने यंग इंडिया को हफ़्ते में दो बार प्रकाशित करने का निर्णय लिया ।

प्रश्न - {4} गांधीजी से मिलने से पहले महादेव भाई कहाँ नौकरी करते थे ?

उत्तर - महादेव भाई गांधीजी से मिलने से पहले सरकारी अनुवाद-विभाग में नौकरी करते थे । इसके साथ ही उन्होंने अहमदाबाद में वकालत भी शुरू की थी ।

प्रश्न - {5} महादेव भाई के झोलों में क्या भरा रहता था ?

उत्तर - महादेव भाई के झोलों में मासिक पत्र-पत्रिकाएँ, समाचार-पत्र और पुस्तकें भरी रहती थीं ।

प्रश्न - {6} महादेव भाई ने गांधीजी की कौन-सी प्रसिद्ध पुस्तक का अनुवाद किया था ?

उत्तर - महादेव भाई ने गांधीजी की 'सत्य के प्रयोग' शीर्षकयुक्त आत्मकथा का अंग्रेज़ी भाषा में अनुवाद किया जो कि यंग इंडिया के कॉलम में प्रकाशित होता था ।

प्रश्न - {7} अहमदाबाद से कौन-से दो साप्ताहिक पत्र निकलते थे ?

उत्तर - 'यंग इंडिया' और 'नवजीवन' ।

प्रश्न -{8} महादेव भाई दिन में कितनी देर काम करते थे ?

उत्तर - महादेव भाई की दिनचर्या अत्यंत व्यस्त थी । वे लगातार कई-कई घंटे तक काम किया करते थे । दिन-भर में लगभग 18 घंटे वे काम में जुटे रहते थे ।

प्रश्न -{9} महादेव भाई से महात्मा गांधी की निकटता किस वाक्य से सिद्ध होती है ?

उत्तर - महादेव भाई से गांधीजी की निकटता इस भजन से सिद्ध होती है- ए रे जखम जोगे नहि जशे- अर्थात् यह घाव कभी योग से भी नहीं भरेगा । बाद के सालों में वे अपने नये कार्यकर्ता प्यारेलाल को पुकारते तो उस समय भी अनायास उनके मुँह से 'महादेव' का नाम ही निकालता |

प्रश्न -{10} गांधीजी ने महादेव को अपना वारिस कब कहा था ?

उत्तर - महादेव भाई का स्थान गांधीजी के मन में पुत्र से भी बढ़कर था। 1917 में वे गांधीजी के संपर्क में आए । उनकी प्रतिभा को गांधीजी ने जल्दी ही पहचान लिया और अपने उत्तराधिकारी का पद सौंप दिया । सन् 1919 में जलियाँवाला बाग हत्याकांड के दिनों में पंजाब जाते हुए जब गांधीजी को पलवल स्टेशन पर गिरफ्तार किया गया । गांधीजी ने तत्काल महादेव को अपना वारिस घोषित कर दिया ।

प्रश्न -{11} गांधीजी से मिलने आने वालों के लिए महादेव भाई क्या करते थे ?

उत्तर - गांधीजी से मिलने के लिए प्रतिदिन अनेक लोग आते थे जो अंग्रेजी शासन के अन्याय और अत्याचार की दास्तान और अपनी पीड़ा गांधीजी को बताते थे । गांधीजी से मिलने से पहले महादेव उनसे मिलकर, उनसे बात करते और उनकी दर्द भरी कहानियों को संक्षेप्त लेकिन सारगर्भित टिप्पणियों में बदलकर गांधीजी को सुनाते थे |

प्रश्न -{12} महादेव भाई की साहित्यिक देन क्या है ?

उत्तर - महादेव भाई एक कुशल लेखक और अनुवादक भी थे । वे गांधीजी की गतिविधियों पर अनेक समाचार-पत्रों में लेख लिखते थे । उनकी सबसे बड़ी साहित्यिक देन गांधीजी की आत्मकथा 'सत्य के प्रयोग' का अंग्रेजी अनुवाद है ।

प्रश्न -{13} महादेव भाई की अकाल मृत्यु का कारण क्या था ?

उत्तर - महादेव भाई प्रतिभा संपन्न और परिश्रमी व्यक्ति थे । वे वर्धा की भीषण गर्मी में हर दिन पूरे ग्यारह मील पैदल सेवाग्राम आते- जाते थे । लम्बे समय तक यह सिलसिला चलता

रहा और उनका स्वास्थ्य बिगड़ गया। उनकी अकाल मृत्यु के कारणों में यह भी एक कारण माना जा सकता है।

प्रश्न -{14} पंजाब में फ़ौजी शासन ने क्या कहर बरसाया ?

उत्तर - फ़ौजी शासन ने पंजाब में यह कहर बरसाया कि वहाँ के नेताओं को गिरफ्तार करके उम्र कैद की सज़ा देकर कालापानी भेज दिया। लाहौर से प्रकाशित प्रमुख राष्ट्रीय अंग्रेज़ी दैनिक समाचार-पत्र 'ट्रिब्यून' के संपादक श्री कालीनाथ को दस साल की कठोर सज़ा दी गई। आज़ादी के आन्दोलन को कुचलने के लिए निहत्थी जनता पर भयानक जुल्म किए गए।

प्रश्न -{15} महादेव जी के किन गुणों ने उन्हें लाड़ला बना दिया था ?

उत्तर - महादेव हमेशा परछाईं की तरह साथ रहने वाले गांधीजी के ऐसे सहयोगी थे जो एक अच्छे लेखक भी थे। वे सम-सामयिक विषयों पर आसान भाषा-शैली और सुंदर हस्तलिपि में सटीक लेखन करते थे। वे विरोधियों की प्रतिक्रियाओं का उत्तर भी संतुलित और शिष्टाचार से युक्त भाषा-शैली में देते थे। विरोधी भी उनके हृदय की उदारता से परिचित थे। इन्हीं कारणों से महादेव जी सबके लाड़ले बन गए थे।

प्रश्न -{16} महादेव की लिखावट की क्या विशेषताएँ थीं ?

उत्तर - उस समय पूरे भारत में महादेव जी की तरह शुध्द और सुन्दर लेखन कोई दूसरा व्यक्ति नहीं कर सकता था। गांधीजी के वायसराय को लिखे पत्र महादेव की लिखाई में ही होते थे। उनकी लिखावट से वायसराय भी प्रभावित था। महादेव तीव्र गति से बिना रुके देर तक लिखते थे, फिर भी उनकी लिखावट में सामान्य गलतियाँ भी नहीं होती थीं। लोग अपनी टाइप की गई रचनाओं को महादेव की रचनाओं से मिलाकर ठीक करते थे।

निम्नलिखित का आशय स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न -{17} 'अपना परिचय उनके 'पीर-बावर्ची-भिश्ती-खर' के रूप में देने में वे गौरवान्वित महसूस करते थे'।

उत्तर - इन पंक्तियों से यह आशय है कि महादेव भाई अपना परिचय गांधीजी के प्रति एकनिष्ठ समर्पित सचिव के रूप में देते थे। वे स्वयं को गांधीजी का सलाहकार, रसोइया और सेवक मानने में शर्म नहीं, गर्व महसूस करते थे।

प्रश्न -{18} इस पेशे में आमतौर पर स्याह को सफ़ेद और सफ़ेद को स्याह करना होता है।

उत्तर - इस कथन का आशय यह है कि वकालत के व्यवसाय में स्याह अर्थात् बुरे कामों को भी अच्छा करार दिया जाता है और सफ़ेद अर्थात सही काम को भी झूठी गवाहियों और दलीलों

के द्वारा गलत साबित कर दिया जाता है । महादेव भाई ने अपने प्रिय मित्र नरहरि भाई के साथ कानून की पढ़ाई की और अहमदाबाद में साथ-साथ वकालत शुरू की | लेकिन महादेव ने हमेशा सही काम किया ।

प्रश्न -{19} देश और दुनिया को मुग्ध करके, शुक्रतारे की तरह ही अचानक अस्त हो गए ।

उत्तर - इस पंक्ति का आशय यह है कि तारामंडल में तेजस्वी शुक्रतारा कुछ ही समय के लिए दिखाई देता है । उसी तरह महादेव भाई भी अल्पसमय में ही अपनी प्रतिभा और परिश्रम से पूरी दुनिया को प्रभावित करके जल्दी ही अस्त हो गये । अर्थात मृत्यु को प्राप्त हो गए ।

प्रश्न -{20} उन पत्रों को देख-देखकर दिल्ली और शिमला में बैठे वाइसराय लम्बी साँस-उसाँस लेते रहते थे ।

उत्तर - इस कथन का आशय है कि महादेव भाई की लिखावट शुध्द, स्पष्ट और सुन्दर थी । अपने अद्भुत भाषा ज्ञान के कारण वे शब्दों का सटीक चुनाव करते थे और त्रुटि रहित वाक्य बनाकर सुन्दर हस्तलिपि में प्रस्तुत कर देते थे । गांधीजी के नाम से जाने वाले गांधीजी के पत्र हमेशा महादेव की लिखावट में जाते थे । उन्हें देखकर दिल्ली और शिमला में बैठे वाइसराय चकित रह जाते । वे लम्बी-लम्बी साँसे भरकर यह सोचते कि सारी ब्रिटिश सर्विस में ऐसा लिखने वाला कोई दूसरा नहीं है ।

************** 3/12/2023 **Prepared** by: सुशील शर्मा ******************

****